ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-1* February- 2019
Innovation The Research Concept

बी0एड0 पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

नेहा अवस्थी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
बी0एड0 विभाग,
अभिनव सेवा संस्थान महाविद्यालय,
कानपुर

सारांश

शिक्षा को बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने तथा उनके व्यवहारों में सुधारात्मक परिवर्तन करने वाली प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य अपने जन्म से मृत्यु तक किसी न किसी रूप में विभिन्न माध्यमों से शिक्षा ग्रहण करता रहता है। यह ही मनुष्य को व्यक्तिगत सामाजिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों की पूर्ति में समक्ष बताती है तथा एक शिक्षित व्यक्ति ही अपने अधिकारों एवं कर्तव्यो के प्रति जागरूक होता है। शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग होते हैं। शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यक्रम इसमें शिक्षक का स्थान अति महत्वपूर्ण है। वह सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की धुरी होता है। उसके निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी ज्ञानार्जन की सही दशा का अनुरूप नहीं कर सकता जे0एफ0ब्राउन शिक्षकों के महत्व के विषय में कहा है :–

''सभी तथ्यों को देखते हुये मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि शिक्षक शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग होता है। पाठ्य सामग्री और शिक्षालय संगठन यद्यपि शिक्षण व्यवस्था के उपयोगी अंग है। पर वे तक तक निर्जीव रहते हैं जब तक शिक्षक के सजीव व्यक्तित्व द्वारा उसमें प्राणों का संचार नहीं हो जाता है।''

क्रो एवं क्रो के अनुसार– किसी भी शैक्षिक सार पर अध्यापक विद्यालय की गतिविधियों का मुख्य आधार है। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति उसी सीमा तक सम्भव है जिस सीमा तक पृथक–पृथक अध्यापक छात्रों को शैक्षिक कार्यविधियों से लाभान्वित होने हेतु प्रेरित करते हैं। किसी भी समाज व राष्ट्र की शैक्षिक प्रक्रिया की सफलता अधिकांशतः अध्यापकों की कर्तव्यनिष्ठा एवं कर्मठता पर निर्भर करती है। शैक्षिक क्षेत्र में योग्य अध्यापकों की व्यवस्था करने के लिये विभिन्न स्तरों पर कई अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं जिनमें से एम0एड0, बी0एड0, बी0टी0सी0 आदि प्रमुख हैं। शिक्षा को बाल केन्द्रित बनाने के लिये सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि बालकों को किस प्रकार प्रभावी एवं कुशल शिक्षण प्रदान किया जा सकता है। इसका समाधान सम्भवतः हो सकता है कि विद्यार्थियों को मनोविज्ञान तथा तकनीकी की सहायता से उचित प्रकार से शिक्षित किया जा सकता है। तकनीकी की सहायता से कुशलतापूर्वक किया जा सकता है। आधुनिक समय में तकनीकी का प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोग किया जा रहा है। तकनीकी से तात्पर्य है विशेष निष्कर्ष प्राप्त करने के लिये व्यवधानिक कार्यों में वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करना। शिक्षा प्रक्रिया को तकनीकी के प्रयोग द्वारा प्रभावी बनाया जा सकता है तथा इससे समय एवं धन की बचत होती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तकनीकी प्रयोग द्वारा प्रभावी एवं उद्देश्य परक बनाई जा सकती है।

मुख्य शब्द : शैक्षिक तकनीक।

प्रस्तावना

शिक्षा में तकनीकी अथवा शैक्षिक तकनीकी का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसके द्वारा शिक्षा का विकास किया जा सकता है एवं शैक्षिक समस्याओं का कुशलतापूर्वक समाधान किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत शिक्षा प्रदान करने के अनेक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। जैसे– रेडियो, टेलीविजन एवं

वर्तमान कम्प्यूटर अति प्रचलित है। कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान करने का आधुनिक उपकरण है तथा वर्तमान में इसका बहुत अधिक प्रयोग हो रहा है। इसके द्वारा कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है तथा आज कल यह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

अध्ययन की आवश्यकता

किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभाविकता उसकी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रभावी होने पर निर्भर करती है। प्रचीन काल में शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों को मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना ही था। वह येन केन प्रकारेण विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक को रटाने में विश्वास रखते थे परन्तु वर्तमान समय में शिक्षक को विद्यार्थी की रूचियों पर विशेष ध्यान देना पड़ता है। उसके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह अपनी शिक्षण योजना इस प्रकार से बनाये जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं की पूर्ति हो तथा राष्ट्रीय एवं शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव हो सके। शिक्षण से तात्पर्य अध्यापन करना एवं परीक्षा लेना मात्र नहीं है। वरन् प्रभावी अधिगम की परिस्थितियां उत्पन्न करना है। वर्तमान समय में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि क्या पढाया गया वरन् महत्वपूर्ण यह है कि ''कैसे पढ़ाया गया'' जिससे विद्यार्थी कम समय में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सके। इसलिये संसार के विभिन्न विकसित देशों में आजकल कम्प्यूटर के द्वारा शिक्षा दी जाने लगी है तथा यह अनुभव किया गया कि शिक्षण की यह विधि अन्य विधियों से उपयोगी है।

अतः सभी देशों में कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया है। जिसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों ही देश के विकास में योगदान दे रहे हैं। आज कम्प्यूटर विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने का महत्वपूर्ण एंव आवश्यक उपकरण बन गया है तथा यह शिक्षा उन्हें शिक्षकों द्वारा प्रदान की जाती है। अतः यह जानना अति आवश्यक है कि शिक्षक कम्प्यूटर शिक्षा के विषय में क्या सोचते हैं? सर्वप्रथम शिक्षकों को शिक्षित करने में तथा अन्य कार्यों के लिये प्रयोग कर सकते हैं। शिक्षकों को बी0एड0 पाठ्यक्रम के द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है।

समस्या कथन

''शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में कम्प्यूटर शिक्षा सम्मिलित किये जाने के प्रति छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के दृष्टिकोण का अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. कला एवं विज्ञान वर्ग के अभ्यार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कला एवं विज्ञान वर्ग के अभ्यार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन

1. यह शोध कार्य कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के अभ्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करने तक सीमित है।
2. अध्ययन के लिये ऐसे अभ्यार्थियों का चयन किया गया है जिन्हें कम्प्यूटर के विषय में पूर्ण ज्ञान नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिये शोधकर्ती ने कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध तीन महाविद्यालयों को चयन किया है। इन महाविद्यालयों के 100 अभ्यार्थियों को स्तरीकृत यादृच्छिक तथा सोद्देश्य न्यादर्श के माध्यम से चुना गया है।

प्रस्तुत अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य के लिये शोधकर्ती ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। इस प्रश्नावली का निर्माण करने के लिए शोधकर्ती ने 60 प्रश्नों का निर्माण किया।

आँकड़ों का परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़ों की गणना करने के लिये शोधकर्ती के द्वारा निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि क्रान्तिक अनुपात आदि का प्रयोग किया।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर की उपयोगिता के प्रति प्रशिक्षण कार्यक्रम के अभ्यर्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन।

अभिवृत्ति		पूर्णतः सहमत		सहमत		अनिश्चित		असहमत		पूर्णतः असहमत	
क्षेत्र	पूर्णांक	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत
शैक्षिक	1000	359	35.9	423	42.3	111	11.1	93	9.3	14	1.4
व्यक्तिगत	1500	420	28	636	42.4	170	11.33	216	14.4	58	3.86
व्यवसायिक	400	159	39.5	126	31.5	52	13	44	11	20	5
सामाजिक	400	79	19.7	167	41.75	69	17.25	68	17	17	4.25

सामान्य	700	209	29.85	288	41.41	98	14	79	11.28	26	3.71
योग	4000	1225	30.6	1640	41	500	12.5	500	12.5	135	3.37

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर की उपयोगिता को 5 प्रतिशत से कम अभ्यर्थी अस्वीकार करते हैं। 20 प्रतिशत अभ्यर्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति है। सबसे अधिक प्रतिशत में अभ्यर्थी कम्प्यूटर की उपयोगिता से सहमत हैं। शैक्षिक, वैयत्तिक सामाजिक एवं सामान्य जीवन में कम्प्यूटर की उपयोगिता के प्रति सहमति रखने वाले अभ्यार्थियों का प्रतिशत 42.3 प्रतिशत 42.4 प्रतिशत, 41.75 प्रतिशत, 41.14 प्रतिशत है।

कला एवं विज्ञान वर्ग के अभ्यर्थियों की कम्पयूटर शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में भी कोई अन्तर नहीं है।

तालिका से यह भी स्पष्ट है कि व्यावसायिक क्षेत्र में उपयोगिता के प्रति अभ्यार्थियों की अभिवृत्ति अत्याधिक सकारात्मक है। इस क्षेत्र में पूर्णतः सहमत अभ्यर्थियों का प्रतिशत 39.5 है। इन प्रदत्तों से यह स्पष्ट होता है कि आज के शिक्षक जो कल संसार में शिक्षा का कार्यभार संभालेगें वे कम्प्यूटर शिक्षा से पूर्ण सहमत हैं। यद्यपि लगभग 40 प्रतिशत अभ्यर्थी ही वर्तमान में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। परन्तु ये निष्कर्ष अस्थायी भी हो सकते हैं। जिसका कारण है कि अब तक सभी लोग कम्प्यूटर से परिचित नहीं है। जब अधिक से अधिक लोग इसमें परिचित हो जायेंगे तो वे शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में कम्प्यूटर को सम्मिलित किये जाने के महत्व को भी स्वीकार कर लेंगे।

निष्कर्ष

आंकड़ों में सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम के अभ्यार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है तथा वे प्रशिक्षण कार्यक्रम में इसे सम्मिलित किये जाने से सहमत हैं।
2. अधिकांश अभ्यर्थी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों शैक्षिक, वैयक्तिक व्यवसायिक सामाजिक तथा सामान्य जीवन में कम्प्यूटर के महत्व से सहमत है।
3. छात्राध्यापकों तथा छात्राध्यापिकाओं दोनों ने ही कम्पयूटर के महत्व को स्वीकार किया है तथा उनकी कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं है।

अतः उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि यद्यपि शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम के अभ्यार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के विषय में पूर्ण सहमति नहीं है। तथापि इसका कारण सम्भवतः यह हो सकता है कि उन्हें इसके विषय में पूर्ण ज्ञान नहीं है तथा अधिकांश अभ्यर्थियों कम्प्यूटर कभी कुछ काम ही नही किया।

शैक्षिक निहितार्थ

यदि कोई शोध वर्तमान ज्ञान में वृद्धि करने में तथा जिस क्षेत्र के लिये किया गया है उसके विषय में सारंगगित तथा प्रस्तुत करने में सहायक नहीं है तो वह अध्ययन कार्य व्यर्थ हो जाता है।

इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम के अभ्यर्थी नई बदलती हुई तकनीक को स्वीकार करने में रूचि रखते हैं। अतः महाविद्यालयों को अपने विद्यार्थियों के लिये कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रमाण करना चाहिये।

इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि का उनके दृष्टिकोण पर कोई प्रभाव नहीं है। अतः सभी अभ्यर्थियों के लिये समान रूप से कम्प्यूटर शिक्षार्थी व्यवस्था करनी चाहिये।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में कम्प्यूटर शिक्षा सम्मिलित किये जाने के प्रति छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है। परन्तु इस क्षेत्र से सम्बन्धित निम्न अध्ययन किये जा सकते हैं।

1. विभिन्न विषयों के अध्यापन से सम्बन्धित साफ्टवेयर का अध्ययन।
2. प्रशिक्षण कार्यक्रम में कम्प्यूटर शिक्षा सम्मिलित किये जाने से सम्बन्धित पाठ्यक्रम का अध्ययन।
3. विद्यार्थियों को कम्प्यूटर द्वारा शिक्षण प्रदान करने के विषय में माता–पिता के दृष्टिकोण का अध्ययन।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *लोकेश कौल (2008) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0 नई दिल्ली।*
2. *सुलेमान मुहम्मद (2005–06) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां जी0बी0ए0 आफसेट पटना।*
3. *डॉ0 आर0एम0 मिश्रा शैक्षिक तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन प्रकाशन आलोक प्रकाशन अमीनाबाद, लखनऊ।*
4. *डॉ0, कर्ण सिंह (2017–18)– सूचना एवं संचार तकनीकी गोविन्द प्रकाशन लखीमपुर खीरी।*